RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-11
November-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i11.002

पशुओं की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन (उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में)

कु० ऊषा

शोध छात्रा (अर्थशास्त्र) चन्द्रावती तिवारी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर (ऊधम सिंह नगर)

उत्तराखण्ड राज्य का गठन 9 नवम्बर 2000 को उत्तर–प्रदेश से अलग होकर हुआ था। उस समय राज्य के समुख्य अनेक चुनौतियाँ थी। राज्य को आर्थिक दृष्टि से मजबूत करने के लिए पशुपालन एक मुख्य साधन था। इस व्यवसाय से राज्य की आर्थिक व्यवस्था को मजबूत करने की सम्भावनायें थी। वर्तमान सममय में भी पशुधन एक ऐसा व्यवसासय है जिसमें उन्नत तकनीकी अपनाकर पशुपालन से . प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया जा सकता है और ग्रामीण भी अपने कार्य स्थल पर ही रोजगार प्राप्त कर सकते है। इससे केवल आर्थिक स्वालम्बन ही प्राप्त नही होगा बल्कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सशक्त करने में सहयोग भी मिलेगा। पशुपालक वैज्ञानिक पद्वति को अपनाकर पशुपालन से अपना आर्थिक स्तर का उत्थान तो करेगें ही साथ ही साथ प्रदेश को समृद्वि बनाने में भी योगदान कर सकेंगे। पशुपालन कृषि व्यवसाय के साथ जुड़ा हुआ एक व्यवसाय है। इससे पौष्टिक भोजन, दुग्ध एवं दुग्ध से निर्मित पदार्थ ही नहीं बल्कि खेती के लिए खाद्य, रोजगार और अतिरिक्त आय प्राप्त करने का साधन भी है। दुधारू पशुओं का पालन करने से एक ओर तो दुग्ध की आपूर्ति होती है दूसरी ओर लोगों को रोजगार भी मिलता है।यह व्यवसाय कम लागत में अधिक आय प्राप्त करने वाला व्यवसाय है।

पशुपालन विभाग द्वारा पशुपालन को लाभकारी व्यवसाय के रूप मं विकसित करने के लिए सतत प्रयास किये जा रहे है। पशुपालन विभाग द्वारा राज्य/मण्डल के अन्तगर्त गाँव–गाँव में स्थित अपनी संस्थाओं के माध्यम से विभिन्न योजना, कार्यक्रमों का लाभ पशुपालकों तक पहुँचाया जा रहा है।

उत्तरखण्ड एक पर्वतीय राज्य है। यहाँ की अधिकांश जनसँख्या गाँवों में निवास करती है। गावों के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है जिसके अंतर्गत पशुपालन का कार्य भी किया जाता है। उत्तराखंड सरकार पशुपालन को रोजगार परक एवं अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बनाकर राज्य के सकल घरेलु उत्पाद में इसका योगदान बढाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है।

शोध अध्ययन के उदेश्य

1. उत्तराखण्ड में पशुओं की संख्या का 2012 और 2019 की पशु गणना के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उत्तराखण्ड में पशुओं की विकास योजना (गंगा गाय योजना, कृत्रिम गर्भादान योजना) का अध्ययन करना।
3. उत्तराखण्ड में दुधारू पशुओं से रोजगार की सम्भावनाओं का अध्ययन करना।

शोध पद्वतियाँ और आंकड़ो का संकलन

शोध अध्ययन में विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक और वर्णनात्मक शोध पद्यतियों का प्रयोग किया गया है। **यहा शोध अध्ययन द्वितियक ऑकड़ों पर आधारित है। ऑकड़ों का संकलन पुस्तक, शोध पत्र और इण्टरनेट आदि के द्वारा किया है।**

शोध अध्ययन का क्षेत्र

शोध अध्ययन का क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य है। भारत के 27 वें राज्य के रूप में उत्तराखण्ड राज्य का गठन 9 नवंबर 2000 में उत्तर–प्रदेश से अलग करके हुआ। यह राज्य भारत के उत्तरी भाग में $28^0$43′ उत्तरी अक्षांश से $31^0$27′ उत्तरी अक्षांश तथा $77^0$34′ पूर्वी देशांतर से $81^0$02′ पूर्वी देशांतर के मध्य 53483 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में बसा है। उत्तराखंड कुमाऊँ व गढ़वाल दो मण्डल में विभाजित है। गढ़वाल मण्डल में हरिद्वार, देहरादून, पौड़ी, टिहरी, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग और चमोली जनपद तथा कुमाऊँ मण्डल में अल्मोड़ा, नैनीताल, उधमसिंह नगर, बागेष्वर, चम्पावत तथा पिथौरागढ़ जनपद हैं।

उत्तराखण्ड में पशु संख्या का तुलनात्मक अध्ययन

किसी भी देश अथवा प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पशुधन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का एक साधन है। पशुपालन से लोगों को एक ओर तो अपने कृषि के लिए खाद्य प्राप्त होती है। दूसरी तरफ यहा रोजगार का एक साधन भी है। उत्तराखण्ड में 2012 और 2019 में पशुधन की स्थिति निम्न प्रकार रही है–

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तालिका 1. उत्तराखण्ड में पशु संख्या का तुलनात्मक अध्ययन (2012–2019)

क्र० सं०	पशुवर्ग	वर्ष (2012)	वर्ष (2019)
1	गोवंशीय पशु (क्रासब्रीड)	497592	571316
2	गोवंशीय (स्वदेशी)	1508461	1275303
3	महर्षिश वंशीय	987775	866318
4	भेड़	368756	284615
5	बकरी	1367413	1371971
6	सूअर	19967	17669
	योग	**4749964**	**4387192**

स्रोत–statistics|department of animal husbendry &dairying Gover ment of.....

इस तालिका में उत्तराखण्ड में 19 वी पशुगणना 2012 तथा 20 वी पशुगणना 2019 के आधार पर पशुओं की संख्या का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस तालिका के आधाार पर उत्तराखण्ड में 2012 में क्रासब्रीड गोवंशीय पशुओं की संख्या 497592 तथा 2019 में 571316 है। इस प्रकार 2012 की अपेक्षा 2019 में क्रासब्रीड गोवंशीय पशु की संख्या मं वृद्वि हुई है। स्वदेशी गोवंशीय पशु 2012 में 1508461 तथा 2019 में 1275303 है अर्थात 2012 की अपेक्षा 2019 में स्वदेशी गोवंशीय पशुओं की संख्या में कमी आयी है। 2012 में महर्षिय वंशीय पशुओं की संख्या 987775 तथा 2019 में 866318 है अर्थात 2012 कर अपेक्षा 2019 में महर्षिय वंशीय पशुओं की संख्या में कमी आयी है। भेड़ों की संख्या 2012 में 368756 तथा 2019 में 284615 है अर्थात 2012 कर अपेक्षा भेड़ की संख्या भी कम है। 2012 में ससूअरों की संख्या 19907 तथा 2019 में 17669 है। इनकी संख्या में भी कमी आयी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्तराखण्ड में 2012 की अपेक्षा 2019 में पशुसंख्या में कमी आयी है।

तालिका 2. उत्तराखण्ड में नर और मादा पशु के आधार पर गौ वंशीय पशुओं का वर्गीकरण (2012–2019)

क्र० सं०	पशुवर्ग	पशु गणना (2012)	पशु गणना (2019)
1(क)	गाय	1508461	1313908
(ख)	बछड़े	65127	478215
	योग	**1573588**	**1792123**

स्रोत–statistics|department of animal husbendry &dairying Gover ment of.....

उपरोक्त तालिका में उत्तराखण्ड में नर और मादा के आधार पर पशुओं का प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका में उत्तराखण्ड में 2019 में गायों की संख्या 1313908 तथा 2012 में 1508461 थी और बछड़ो की संख्या 2019 में 4782215 तथा 2012 में 65127 है अर्थात गायों की संख्या में कमी तथा बछड़ों की संख्या में वृद्वि हुई है।

तालिका 3. उत्तराखण्ड में नर और मादा पशु के आधार पर महर्षिय वंशीय पशुओं का वर्गीकरण (2012–2019)

क्र सं	पशु	2012	2019
(क)	मादा भैंस	98775	793960
(ख)	नर भैंस	114149	72358
	योग	**1101924**	**866318**

स्रोत–statistics|department of animal husbendry & dairying Government of.....

इस तालिका में उत्तराखण्ड में महर्षिय वंशीय पशुओं का अध्ययन नर और मादा पशुओं के आधार पर दर्शाया गया है। इसी प्रकार 2019 में यहाँ पर मादा भैसों की संख्या 793960 तथा 2012 में नर भैसें 2019 में 72358 तथा 2012 में 114149 है अर्थात नर भैसों की संख्या में भी गिरावट हुई। इस प्रकार स्पष्ट है कि यहाँ पर पशुधन में गिरावट हुई है।

उत्तराखण्ड में पशुओं की विकास योजनायें–

इस शोध अध्ययन में दो विकास योजनाओं गंगा गाय योजना और कृत्रिम पशु गर्भादान योजनाओं का अध्ययन किया गया है जो निम्न प्रकार है–

गंगा गाय योजना– इस योजना के अन्तर्गत दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों के महिलाओं की बैठक कर, योग्य महिला का चयनकर उसे इस योजना का लाभ दिया जाता है।

इस योजना के अन्तगर्त 1 संकर नस्ल की गाय उपलब्ध कराई जाती है। प्रदेश सरकार ने इसका महिलाओ ंको आत्मनिर्भर बनाने के लिए इस योजना की शुरूआत की। योजना अन्तगर्त ग्राम स्तर पर गठित सहकारी समितियों की 4795 महिला सदस्यों को आर्थिक रूप से स्वालम्बी बनाने के उदेश्य से 1 संकर नस्ल की दुधारू गाय दी जाती है। जिसकी लागत 52 हजार रू है। इस योजना के अन्तगर्त 27 हजार रू का अनुदान किया जाता है और 2000 रू का बैंक ऋण तथा 5 हजार रू लाभार्थि का अंश होता है। अभी तक इस योजना के अन्तगर्त लाभ प्राप्त करने वाले लाभार्थि निम्न प्रकार है–

तालिका 4. गंगा गाय योजना से लाभ प्राप्त करने वाले लाभार्थी (2014–2019)

क्रं० सं०	वर्ष	लाभार्थी
1	2014–15	366
2	2015–19	1066
3	2016–17	1040
4	2017–18	1043
5	2018–19	711

स्रोत–daryvikasuttarakhand.org>kya...

कृत्रिम गर्भादान योजना

यहा योजना 15 सितम्बर 2019 को आरम्भ की गयी है। गाय भैंसों की देशी नस्ल को बढावा देने के लिए केन्द्र सरकार ने कृत्रिम गर्भादान कार्यक्रम चलाया है। इस योजना में उत्तराखण्ड देश के आठवें स्थान पर है। यु० एस० नगर को छोड़कर राज्य के सभी जनपदों में चलायी जा रही है। राज्य में अभी तक 40 हजार में से 68576 पशुओं का कृत्रिम गर्भादान किया जा चका है।

तलिका 5. कृत्रिम गर्भादान

क्र सं	जनपद	पशु संख्या
1	नैनीताल	6223
2	अल्मोड़ा	7673
3	पिथौरागढ़	4124
4	चंपावत	5452
5	देहरादून	8001
6	हरिद्वार	13344
7	चमोली	2886
8	पौड़ी गढवाल	5062
9	रूद्रप्रयाग	3877
10	टिहरी गढवाल	3570
11	उत्तरकाशी	4632
12	बागेश्वर	3732

स्रोत–www.jagran.com

उपरोक्त तालिका में उत्तराखण्ड में कृत्रिम गर्भादान के द्वारा गर्भादान किये गये पशुओं की संख्या को दर्शाया गया है। इसके लिए प्रदेश सरकार ने प्रत्येक जनपद में सौ गाँव चिहिन्त किये थे यदि गाँव में पशुओं की संख्या कम है तो विभाग द्वारा 300 गाँवसें तक कृत्रिम गर्भादान कर सकते है। इसमें साहिवाल, गिरी, मालवी, निमाड़ी और थारपारकर जैसी नस्लों को बढावा किया जा रहा है। इससे आने वाले समय में दुग्ध की गुणवत्ता सुधरेगी और दुग्ध उत्पादकों की आय दोगुनी की जा सकती।

दुग्ध उत्पादन से रोजगार की सम्भावना

स्तनधारी पशुओं की सभी प्रजातियाँ दुग्ध उत्पन्न करती है। वर्तमान समय में वैज्ञानिक पद्वति को अपनाकर या उन्नत तकनीकी को अपनाकर पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में वृद्वि करने का प्रयास निरन्तर किया जा रहा है। वैज्ञातिक पदद्वि को अपनाकर पशुओं से इतना दुग्ध प्राप्त किया जा रहा है कि वे अपने शीशु पशुओं की आवश्यकता से अधिक दुग्ध देने लगते है। इस अतिरिक्त दुग्ध का यो तो वे स्वंम उपभोग करते है या डरी के माध्यम से दुग्ध का विक्रय कर आय प्राप्त करते है। इस प्रकार दुधारू पशुओं से एक ओर तो दुग्ध की आपूर्ति होती है दूसरी ओर लोगों को रोजगार भी प्राप्त हो रहा है। प्रदेश स्तर पर सहकारी डेरी फेडरेशन, जिला स्तर पर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ और ग्राम स्तर पर 365 से भी अधिक दुग्ध समितियां हैं। जिनमे 148275 दुग्ध उत्पादक सदस्य जुड़े हैं। प्रदेश में 11दुग्ध उत्पादक सहकारी संघो के अंतर्गत 9दुग्धशालाएँ हैं। जिनकी प्रसंस्करण क्षमता प्रतिदिन 205लाख लीटर है। राज्य में दुग्ध उत्पादन में वृदि करने के लिए कई डेरी विकास योजनाएं शुरू की गई हैं। उधमसिहं नगर में मिल्क पाउडर प्लांट है। दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में लाखों लोग कार्य कर रहे है। यदि इस क्षेत्र को और अधिक विस्तारित किया जाय जो और अधिक लोगों को इस क्षेत्र से रोजगार मिल सकता है।_इस प्रकार डेरी उद्योग में रोजगार की अपार सम्भावनायें है जो लोगों की आर्थिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है।

निष्कर्ष

किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए पशुधन एक सस्ता और महत्वपूर्ण साधन है क्योंकि यदि उच्च नस्ल के पशुओं के पालन से अधिक से अधिक आय प्राप्त की जा सकती है। उत्तराखण्ड सराकर द्वारा पशुओं के विकास के लिए अनेक योजनायें चलायी जा रहरी है जैसे– गंगा गाय योजना, कृत्रिम गर्भादान योजना,मिनी डेरी विकास योजना, आदि इन योजनाओंसे अनेक लोगों को लाभ प्राप्त हुआ है सरकार के इतने प्रयासों केबाद भी उत्तराखण्ड में 2012 की अपेक्षा 2019 में पशुसंख्या में कमी आयी है।

सूझाव

1.उत्तराखण्ड में पशुओं की संख्या में वृद्वि करने के लिए अधिकाश पशुओं पालकों को उच्च नस्ल के पशुओं का क्रय करने के लिए प्रोत्साहन करना चाहिए।

2.पशुओं के प्रति लोगों को आकर्षित करना होगा।

3.सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ देने के लिए चलने वाली प्रक्रिया को सरल बनाना चाहिए।

4. सरकार को पशुपालन करने के लिए अनुदान और ऋण प्राप्त करने की प्रक्रिया को सरल बनाना चाहिए।

5. गंगा गाय योजना से लाभ प्राप्त करने की प्रक्रिया को और सरल बनानी चहिए और इस योजना का लाभ महिलाओं के साथ साथ पुरूषों को भी देना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. नवानी, लोकेश,: (2012) उत्तराखनड ,इयर बुक, विनसर पब्लिकेशन्स, देहरादून

[2]. त्रिपाठी, केशरी, नन्दन, : (2015–16) परीक्षावाणी, उत्त्राखण्ड एक समग्र अध्ययन, नागरी प्रेस, अलोपीबाग, इलाहाबाद

[3]. जैन,डॉ० एस० सी०, : भारतीय अर्थव्यवस्था, साहित्य भवन पब्लिकशन्स, आगरा

Websites

[1]. statistics|department of animal husbendry &dairying Gover ment of.....

[2]. daryvikasuttarakhand.org>kya...

[3]. statistics|department of animal husbendry &dairying Gover ment of.....

[4]. www.jagran.com

RRIJM 2015, All Rights Reserved